Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

वृत्ति एवं उसका रसानुकूल प्रयोग

मीनू कुमारी
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 5
Page Number : 60-62
Publication Issue :
September-October-2021
Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 09 Sep 2021

शोधसारांश – नाट्यवृत्ति में वर्णित विषयों में महत्त्वपूर्ण विषय वृत्ति है नाट्यशास्त्र में वृत्ति शब्द 'व्यापार' अर्थ में गृहीत है भरत के अनुसार नायकादि के कायिक वाचिक और मानसिक व्यापार 'वृत्ति' है वृत्ति के द्वारा ही नाटय में रसोदय होता है।

आनन्दवर्धन इसी 'वृत्ति' का 'व्यवहार' अर्थ ग्रहण करते हुए रस के अनुकूल औचित्य से युक्त वाच्य से आश्रित व्यवहार को कैशिकी आदि वृत्ति बताते है।[1] दशरूपककार वृत्तियों के विषय में बताते है कि नायकादि का व्यापार 'वृत्ति' है जो चार प्रकार की होती है। – **तदव्यापारात्मिका वृत्तिश्चतुर्धा। दशरुपक 2/47**

भरतमुनि ने नाटयशास्त्र के दशरूप नामक अट्ठारहवें अध्याय में वृत्तियों कों नाटय की माता कहा है क्योंकि इन्ही वृत्तियों के माध्यम से दशों प्रकार के रुपक निष्पन्न हुए है।[2] नाट्य प्रयोग काल में पात्रों का कायिक, वाचिक, सात्विक व्यापार ही वृत्ति है। वृत्तियां नाट्य में रसोदय का स्रोत है और रसोदय की परिकल्पना इन व्यापारों के बिना सम्भव नहीं इसलिए भरत ने इन्हे नाटय की माता की संज्ञा से सम्बोधित किया है **(वृत्तयो नाट्यमातरः)।**

आचार्य अभिनव गुप्त ने वृत्तियों को एक प्रकार की चेष्टा माना है जो अभिनय से सम्बद्ध मानी जाती है ये लौकिक और अलौकिक दो रूपों में होती है। लौकिक चेष्टाएं रस निष्पत्ति में सहायक नहीं होती। किन्तु जो कवि, नायक और दर्शक आदि के अन्तःकरण में सामान्यतः विद्यमान रहती है वे काव्यशास्त्रीय अथवा अलौकिक चेष्टाएं होती हैं ये रस निष्पत्ति में सहायक होती है। लौकिक चेष्टा प्रवर्तक होती है और अलौकिक चेष्टा आस्वादक होती है। लौकिक चेष्टाओं के लिए किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती किन्तु काव्यात्मक चेष्टाओं के लिए नायकादि को प्रशिक्षण लेना पड़ता है तथा उसमें शास्त्रीय औचित्य के अनुकूल कार्य करना पड़ता है। अतएव काव्यात्मक व नाट्यात्मक चेष्टाओं को अलौकिक कहा जाता है और इन्ही अलौकिक चेष्टाओं को या अभिनय विद्या को नाट्यवृत्ति नाम से अभिधान किया जाता है।

1– व्यवहारो हि वृत्ति रित्युच्यते। तत्र रसानुगुण औचित्यम् वाच्याश्रयो यो व्यवहारस्ता एताः कैशिकाद्याः वृत्तयः। (ध्वन्यालोक 3/33 वृत्तिभाग)

2– सर्वेषामेव काव्यानां मातृका वृत्तयः स्मृताः। आभ्यो विनिःसृतं ध्येतदृशरूपं प्रयोगतः।।(नाट्यशास्त्र 18/4)

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

उपर्युक्त आचार्यों के मतानुसार नाट्य में वास्तविकता जीवटता और रसमयता के संचार के लिए काय वाक् एवं मनोव्यापारों का पात्रों के द्वारा जो प्रदर्शन किया जाता है वही वृत्ति है। निश्चय ही इस रूप में वृत्ति रसोदय का स्रोत होने से नाट्य की माता है।

सामान्यतः वृत्तियों की संख्या चार मानी गयी है– **भारती, सात्तवती, कैशिकी और आरभटी।**

भारती वृत्ति वाक्प्रधान होती है यह पुरुषों द्वारा प्रयोज्य तथा संस्कृत वाक्यों से परिपूर्ण होती है, इसके प्ररोचना, आमुख, वीथी और प्रहसन ये चारो अंग होते है।[3]

सान्त्वती वृत्ति सत्व–प्रधान मानस व्यापार है इसमें वाचिक एवं आंगिक अभिनयों के साथ सत्त्व या मनोव्यापार की अधिकता पायी जाती है। सात्वती का अर्थ है सत्व से निष्पन्न व्यवहार। और सत्व का अर्थ है– तमोगुण से अस्पृष्ट मन **(रजस्तमोभ्यामस्पृष्टं मनः सत्वमिहोच्यते)।** भरतमुनि इस वृत्ति का परिचय देते हुए कहते है कि इसमें सत्वगुण की प्रधानता रहती है यह न्यायवृत्त से समन्वित होती है। इस वृत्ति में शौर्य, त्याग, दया, दान, आर्जव आदि भावों की स्थिति होती है। इसमें सत्वगुण की प्रधानता रहती है यह न्यायवृत्त से समन्वित होती है। इस वृत्ति में शौर्य, त्याग, दया, दान, आर्जव आदि भावों की स्थिति होती है। इसमें हर्ष का प्रकाशन, शोक का संचरण एवं अद्भुत रस की प्रचुरता होती है। इसके भी उत्थापक, परिवर्तक, सांघात्य और संलापक ये चार अंग होते है।[4]

सुन्दर नेपथ्य नायकादि की वेशभूषा से विशेष चमत्कारयुक्त स्त्रियों से परिपूर्ण तथा पुरूषों द्वारा भी प्रयोज्य नृत्य–गीत, विलास, कामक्रीड़ा आदि से युक्त कैशिकी वृत्ति होती है। इसके भी नर्म, नर्मस्फिज, नर्मगर्भ, नर्मस्फोट ये चार अंग होते है।[5]

माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, उद्भ्रान्त चेष्टायें वध तथा बन्धनादि से परिपूर्ण आरभटी वृत्ति होती है। इसके भी संक्षिप्तक, अवपात, वस्तुत्थापन और सम्फेट ये चार भेद है।[6]

3– या वाक्प्रधाना पुरुषप्रयोज्या स्त्रीवर्जिता संस्कृत पाठ्ययुक्ता।
स्वनामधेयैर्भरतै प्रयोज्या सा भारती नाम भवेत्तु वृत्तिः।। (नाट्यशास्त्र 20/26)

4– या सात्त्वतेनेह गुणेनयुक्ता न्यायेन वृत्तेन समन्विता च।
हषोत्कता संहृतशोकभावा सा सात्त्वती नाम भवेन्तु वृत्तिः।।(नाट्यशास्त्र 22/38)

5– या श्लक्ष्णनेपथ्यविशेष चित्रा स्त्रीसंयुता या बहुनृत्यगीता।
कामोपभोगप्रभवोपचारा तां कैशिकी वृत्तिमुदाहरन्ति।।(नाट्यशास्त्र 20/53)

6– आरभट प्रायगुणा तथैव बहुकपट वञ्चनोपेता।
दम्भानृतवचनवतीत्वारभटी नाम विज्ञेया।।(नाट्यशास्त्र 20/64)

वृत्तियों का सम्बन्ध नायक – नायिका एवं अन्य पात्रों के वाचिक कायिक और मानसिक व्यापारों से है। ये चेष्टायें ही रस का उद्बोधन करती है। अतः भरत ने वृत्तियों के संदर्भ में उनकी रसानुकूलता का भी विचार किया है भरत की दृष्टि से कैशिकी सुकुमार वृत्ति होती है। इसमें हास्य और श्रृंगार की बहुलता होती है। सात्वती में वीर और अद्भुत रसों की प्रमुखता होती है। रौद्र और अद्भुत में आरभटी तथा बीभत्स करूण में भारती की प्रधानता होती है।[7] कोहल ने तो करूण रस में भी कैशिकी वृत्ति की प्रधानता मानी है।[8] भारती वाक् प्रधान होने के कारण सब रसों और भावों में वर्तमान रहती है।

भरत ने वृत्ति के उपसंहार के रूप में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है कि कोई काव्य या नाट्य प्रयोग के क्रम में एक रसज नहीं होता। उसमें विभिन्न भावों, रसों, वृत्तियों और प्रवृत्तियों का योग होता ही है। सब भावों वृत्तियों और रसों के समन्वित होने पर उनमें प्रधान तो रस होता है शेष संचारी होते हैं। वृत्तियों की भी यही दशा है। उनका निर्धारण भी प्रधानता के अनुसार होता है।[9]

7– नाट्यशास्त्र 20/ 72–74 (गा0 ओ0 सी)

8– भरत कोष, पृ0 634।

9– न ह्येकरसजं काव्यं किंचिदस्ति प्रयोगतः।

भावो वाऽपि रसो वाऽपि प्रवृत्तिः वृत्तिरेव वा। (ना0 शा0 20/74)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– नाट्यशास्त्र – भरतमुनि, गायकवाड़ ऑरियन्टल सीरीज, बड़ौदा।

2– दशरूपकम् – दहाललोकमणि चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन वाराणसी

3– ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धन व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर

4– भरत और भारतीय नाट्यकला – सुरेन्द्रनाथ दीक्षित